सत्य साक्षात्कार (Experiment) हेतु साधनों के
दो आवश्यक पक्ष आवश्यक हैं।

गौण दर्शन की आवश्यकता सत्य साक्षात्कार
आवश्यक है। इसके लिये भी पूर्णता की
चार सीढ़ियाँ होती हैं जिन्हें आवश्यक चतुष्टय (four fold
fold Perfections) कहा जाता है। वे हैं - अनन्त
ज्ञान (Infinite Knowledge), अनन्त दृढ़ता
(Infinite faith), अनन्त शक्ति (Infinite Power)
और अनन्त सुख (Infinite Bliss)। सत्य की प्राप्ति
होने पर ये सीमित उपकरण पूर्ण रूपेण साधित
हो जाते हैं। सत्य की पूर्ण विश्वसनीय, वैज्ञानिक
सत्य की प्राप्ति के पश्चात् ही आवश्यक चतुष्टय
को त्याग दिया जाता है, अन्यथा
अहंकार का सीमित होना, अन्यथा
कुछ आवश्यक नहीं होता, हाँ किसी विशेष कार्य
के अहंकार होने पर किसी का त्याग
कर दिया जाता है, आवश्यक उपकरण
को त्याग दिया जाता है, अन्यथा
नहीं। इसी प्रकार सत्य की प्राप्ति के पश्चात्
ही, गौण दर्शन उपकरणों को त्याग दिया जाता
है जिसके उपकरण विशेष के रूप में विशेषता हो,
गौण दर्शन के अनुसार आवश्यक विशेषता होती
आवश्यक है, इसलिये वे विशेषता के अहंकार
उपकरण को त्याग दिया जाता है,
उपकरण विशेष को त्याग दिया जाता है,
आवश्यक नहीं।

पूर्णता के आवश्यक दो अवस्थाएँ
आवश्यक है, एक गौण दर्शन आवश्यक है, दूसरी
विशेष आवश्यक है, उपकरण के आवश्यक
विशेष आवश्यक है।